Impact Factor (QJIF): 8.47 E-ISSN: 2583-1615, P-ISSN: 3049-3498

International Journal of Research in Academic World

Received: 13/May/2026 **IJRAW:** 2026; 5(7):94-96 **Accepted:** 16/June/2026

मैत्रेयी पुष्पा के उपन्यास 'त्रिया हठ' में निहित लोकजीवन और लोकसंस्कृति

***[1]डॉ. गीता संतोष यादव**

*[1]सहयोगी प्रध्यापक, हिन्दी विभाग, एस.एम्.आर.के महिला महाविद्यालय, नाशिक, महाराष्ट्र, भारत।

सारांश

मैत्रेयी पुष्पा हिन्दी साहित्य जगत की एक ऐसी रचनाकार हैं जिन्होंने अपने लेखन के माध्यम से भारतीय ग्रामीण स्त्री के जीवन संघर्षों को अभूतपूर्व गहराई और संवेदना के साथ प्रस्तुत किया है। उनका लेखन स्वातंत्र्योतर भारत के सामजिक परिवेश को, विशेषकर पुरूष-प्रधान व्यवस्था में स्त्रियों की दयनीय स्थिति और प्रतिरोध के बदलते स्वरूपों को अत्यंत सजीवता से चित्रण करता है। सन्२००६ में प्रकाशित उनका उपन्यास त्रिया हठ इसी परंपरा की एक महत्वपूर्ण कड़ी है, जो ग्रामीण स्त्री की मुखरता, उसके अस्तित्व संघर्ष और पितृसत्तात्मक व्यवस्था के प्रति उसके 'हठ' के केंद्र में रखता है।

इस शोध-प्रपत्र का उद्देश त्रिया हठ के विषय-वस्तु, चरित्र-चित्रण, नारी चेतना, भाषा-शैली और उसके सामाजिक-सांस्कृतिक निहितार्थों का बहुयामी विश्लेषण करना है। उपन्यास के भीतरी स्त्री-शरीर, यौनिकता, वर्ग-जाति के प्रश्न और पितृसत्तात्मक के प्रति प्रतिरोध के विविध रूप इस अध्ययन के केंदीय बिंदु होंगे।

मुख्य शब्द: 'त्रिया हठ', 'मैत्रेयी पुष्पा', 'संकल्प', 'सती', 'देवी', 'पतिव्रता'।

प्रस्तावना

हिंदी साहित्य की सशक्त हस्ताक्षर मैत्रेयी पुष्पा द्वारा रचित उपन्यास 'त्रिया हठ' (२००६) एक अत्यंत महत्वपूर्ण और विचारोत्तेजक कृति है। यह उपन्यास ग्रामीण परिवेश की पृष्ठभूमि में पारंपरिक पितृसत्तात्मक मान्यताओं और स्त्री की निर्णय-क्षमता का गहन मनोवैज्ञानिक और समीक्षात्मक विश्लेषण करता है। 'त्रिया हठ' का शाब्दिक अर्थ है - स्त्री द्वारा किसी बात पर अड़ जाना या हठ करना। सामान्यतः समाज में इस शब्द का प्रयोग नकारात्मक रूप में किया जाता है, जहाँ स्त्री की जिद को समाज विरोधी या अनुचित मान लिया जाता है। लेकिन मैत्रेयी पुष्पा इस उपन्यास के माध्यम से इस अवधारणा का पुनर्पाठ करती हैं। लेखिका का मानना है कि स्त्री का यह 'हठ' मात्र जिद नहीं, बल्कि उसके आत्म-सम्मान, अस्तित्व और अधिकारों की रक्षा के लिए उठाया गया एक दृढ़ 'संकल्प' होता है। उपन्यास का उद्देश्य समाज द्वारा थोपे गए 'सती', 'देवी' और 'पतिव्रता' जैसे छद्म आदर्शों की पोल खोलना और स्त्री की अपनी इच्छाओं व अधिकारों को मान्यता दिलाना है।

'त्रिया हठ' उपन्यास की कथावस्तु मुख्य रूप से 'उर्वशी' के इर्द-गिर्द घूमती है, जो एक विधवा है। इस उपन्यास की विशेषता यह है कि कथा का ताना-बाना मीरा (उर्वशी की सखी और उपन्यास की वाचिका) द्वारा बुना जाता है। उपन्यास के मुख्य पात्रों में उर्वशी, बरजोर सिंह (मीरा के पिता), उदय (बरजोर सिंह का छोटा बेटा), सर्वदमन सिंह (उर्वशी के मृत पति), देवेश (उर्वशी और सर्वदमन का बेटा) आदि शामिल हैं।

कथावस्तु का प्रारंभ उर्वशी के वैधव्य और उसके पति की एक सड़क दुर्घटना में मौत के बाद होती है। उसके बाद, उर्वशी और बरजोर सिंह (मीरा के पिता) के बीच पनपते संबंधों को कथा का आधार बनाया गया है। एक ओर जहाँ समाज 'उर्वशी' को एक 'पतिव्रता' स्त्री के रूप में देखता है, वहीं उसके जीवन में छिपे हुए भावनात्मक और शारीरिक द्वंद्वों को भी कहानी में गहराई से उजागर किया गया है। जब उर्वशी की संदेहास्पद परिस्थितियों में मृत्यु हो जाती है, तो उसका बेटा देवेश अपनी माँ की मौत की सच्चाई और उसे न्याय दिलाने के लिए एक खोजबीन शुरू करता है।वह मीरा से पूछता है कि-"असल में ध्यान यह आया मीरा जिज्जी कि मेरी माँ तुम्हारे पिता की दूसरी औरत थी। वह तुम सब की इच्छा के खिलाफ वहाँ गयी थी। फिर भी तुम्हारे उदय भैया को वह बहुत प्यारी थी। वे उस पर जान छिड़कते थे। लोग कहते हैं कि फिदा थे। पर उन्हीं की जायदाद पर हिस्सेदार हुई जा रही थी। क्या प्यार में ही तो नहीं मार डाली गई वह?" [1] इस प्रक्रिया में, पुरुषों की स्वार्थपरता, संपत्ति हड़पने की साजिशों और तत्कालीन समाज के दोहरे चरित्र का पर्दाफाश होता है।

'त्रिया हठ' हिंदी साहित्य में स्त्री-विमर्श का एक उत्कृष्ट उदाहरण है। मैत्रेयी पुष्पा ने अपनी नायिकाओं को केवल पीड़ित या अबला के रूप में चित्रित नहीं किया है, बल्कि उन्हें अपने अधिकारों के लिए संघर्ष करते हुए और मुखर होकर समाज के बनाए नियमों को चुनौती देते हुए दिखाया है।त्रिया हठ ग्रामीण परिवेश की उन स्त्रियों की कहानी है जो समाज द्वारा निर्धारित सीमाओं की भीतर अपनी

***Corresponding Author:** डॉ. गीता संतोष यादव

स्वायत्तता का दावा करती हैं। उपन्यास का शीर्षक ही इनके केन्द्रीय विषय को प्रकट करता है। त्रिया अर्थात स्त्री और हठ अर्थात जिद, अड़, आग्रह । यह 'हठ 'केवल अख्खड नहीं, बल्कि अस्तित्व को बचाये रखने का संघर्ष है, पितृसत्ता की उन मान्यताओं के प्रति जो स्त्री को अन्य के रूप में स्थापित करती है।

उपन्यास में स्त्रियों के जीवन के विविध पहलू उजागर होते हैं – विवाह, विधवापन, यौनिकता, मातृत्व, जातिगत भेदभाव और आर्थिक शोषण। मैत्रेयी पुष्पा ने यह दिखाया है कि ग्रामीण स्त्रियाँ असंख्य बाधाओं के बावजूद अपने संघर्ष के माध्यम से सशक्तिकरण के नए प्रतिमान स्थापित करती हैं। वे पितृसत्ता, सामजिक मानदंडों और संस्थागत उत्पीडन के खिलाफ लडाई में साहस, लचीलापन, और दृढ़ता का प्रतीक है। उपन्यास में इस बात पर गहरा प्रहार किया गया है क्योंकि एक स्त्री को हमेशा त्याग और समर्पण की मूर्ति ही माना जाना चाहिए। लेखिका सवाल पूछती हैं कि यदि कोई स्त्री अपने हक की बात करती है, तो उसे कुलटा या विरोधिनी क्यों मान लिया जाता है? उर्वशी का चरित्र इसी मानसिक द्वंद्व को दर्शाता है। वह समाज के बनाए सांचे में ढलने का प्रयास तो करती है, लेकिन भीतर ही भीतर एक स्वतंत्र अस्तित्व की चाह भी रखती है। उसका हर निर्णय, हर कदम समाज की स्थापित मान्यताओं को हिलाने का कार्य करता है। उर्वशी पुत्र देवेश के माध्यम से ही कथा आगे बढ़ती है और पूरे कथ्य का पता चलता है । इसमें कहीं- कहीं उसे मीरा की नाराजगियों का सामना भी करना पड़ता है। जैसे-" मैं अपने मनमुताबिक नहीं, तथ्यों के अनुसार लिखना चाहता हूँ, जिसमें मुझे कुछ छिपाना नहीं है। बताना है कि प्यार और घृणा जीवन के ऐसे सरल पहलू नहीं हैं, जैसा कि हम दिखाते हैंवे इतने सहज हैं कि दिखाना ही उन तत्त्वों को नष्ट करने लगता है, जो प्यार और घृणा की आत्मा होते हैं। जिन्दगी गुजरती है, मगर उसी को नाटक में ढालकर गुजरें तो कितना सावधान रहना पड़ता है। प्यार और घृणा की कशमकश उर्वशी की जिन्दगी में आनेवाले तमाम पात्रों में रही होगी। मेरी दृष्टी कहाँ-कहाँ जाती है मैं भी तो देखूँ और मैं घुसपैठिये लोगों की मानसिकता को उनके ही वक्तव्यों की छलनी में छानकर निर्णयों के फिल्टरों का प्रयोग अजमाऊँ।" [2] मैत्रेयी पुष्पा की रचनाओं में पितृसत्ता का प्रतिरोध एक आवर्ती विषय है।वे दिखाती हैं कि ग्रामीण स्त्री अपनी व्याकुलता और दुःख को एक राजनीतिक चेतना में बदल देती है, जो उन्हें असम्मानजनक भूमिकाओं की स्वीकृति से विद्रोह करने की प्रेरणा देती है। त्रिया हठ में यह प्रतिरोध विभिन्न रूपों में प्रकट होता है-कुछ पात्र खुले विद्रोह का रास्ता चुनती हैं, तो कुछ चुपचाप, अपने तरीके से पितृसत्तात्मक संरचनाओं को कमजोर करती हैं। उल्लेखनीय है कि मैत्रेयी पुष्पा के पात्रों का प्रतिरोध पश्चिमी नारीवादी आदर्शों में नहीं, बल्कि भारतीय ग्रामीण परिवेश की जमीनी वास्तविकताओं में निहित है। "त्रिया हठ" के पात्र इसी प्रकार के पेचीदा रणनीतियों का प्रयोग करते हैं।

मैत्रेयी पुष्पा अपने उपन्यासों में ग्रामीण परिवेश, लोक-जीवन और स्थानीय बोलियों के अद्भुत प्रयोग के लिए जानी जाती हैं। 'त्रिया हठ' में भी विंध्यांचल और ग्रामीण भारत की संस्कृति, रीति-रिवाजों और सामाजिक ताने-बाने की सजीव झांकी देखने को मिलती है। ग्रामीण अंचल की भाषा और मुहावरे उपन्यास को यथार्थवादी और प्रामाणिक बनाते हैं।जैसे- "लला, जो छान खोले, सो छान छाए। तुम्हारे अजित मामा ऐन चालक थे, कमी-बेसी होगी तो विसंभरसिंह जिम्मेदार होंगे। सारी इज्जत तो बूढ़े के साफा संग बँधी थी। लड़का मनमानी करते हैं नादान मान लिए जाते हैं। विकट संकट आन खड़ा है।" [3]

ग्रामीण स्त्री की भाषा में निहित लोक-स्मृति उनके उपन्यासों को एक विशिष्ट सांस्कृतिक आयाम देती है। यह लोक-वार्ताएं, किस्से-कहावतें, अफवाहें और ग्रामीण स्त्रियों के मानस में समाई होती हैं, जो उनकी सामूहिक सांस्कृतिक स्मृति का निर्माण करती है। जैसे मामी गाँव में प्रधानी के चुनाव में "अरे, काए को ? अपनी बिरादरी की तीन जनी ठाडी हैं। पहले जमाने नहीं रहे कि आदमी औरत को सात पर्दों में छिपाकर रखता था। अब का जमाना सरकार ने ऐसा उलटा कि हर कोई अपनी जनी आगे करे फिर रहा है और अपुन पीछे से निशाना साध रहा है। समझ लो कि तीर-कमान और शतरंज का मिला-जुला खेल है। [4]

उपन्यास के माध्यम से लेखिका ने यह भी दर्शाया गया है कि ग्रामीण समाज में विधवा महिलाओं की स्थिति कितनी दयनीय होती है। संपत्ति के अधिकार और पारिवारिक सम्मान के नाम पर महिलाओं का मानसिक और शारीरिक शोषण कैसे किया जाता है, इसका बहुत ही सजीव चित्रण इस उपन्यास में हुआ है।उर्वशी का यह कथन "मैं तुमसे कोई वचन नहीं माँग रही फूफा, न कोई धन-दौलत चाहिए। बस, मेरे साथ खड़े हो जाओ। मुझे तुम्हारी जरूरत है। तुम्हारे घर में मेरे कारण ...'इतना ही कहा था कि बरजोर सिंह ने अपना साँवला हडीला हाथ उर्वशी के होंठो पर रख दिया –आगे कुछ नहीं बस। उर्वशी...तुम्हें हमारा कौल है। [5]

'त्रिया हठ' केवल एक घटना-प्रधान उपन्यास नहीं है, बल्कि यह पात्रों के मन और मस्तिष्क में चल रहे अंतर्द्वंद्व का मनोवैज्ञानिक विश्लेषण भी प्रस्तुत करता है। मीरा, जो इस कथा को बयां करती है, के मन में भी अपने पिता के कृत्यों को लेकर एक उथल-पुथल मची रहती है। वह अपने पिता (बरजोर सिंह) के प्रति कृतज्ञ भी है, लेकिन उनके द्वारा महिलाओं के शोषण को लेकर उसके मन में शंकाएं भी उठती हैं। "उर्वशी फूफा कहकर आगे बड़ी, मगर फिर ठिठक गयी। बरजोर सिंह ने शायद नहीं सोचा था कि यह परिवार का परिकोटा है, जहाँ दोनों खड़े हैं। उन्होंने आश्चर्य और अनुराग से कहा उर्वशी! "दोनों में से किसने किसे गले लगाया कहा नहीं जा सकता, सिवा उन दोनों के।" [6] लेकिन मीरा ने जरूर अपने हाँथ की नस काट डाली थी।

देवेश का चरित्र युवा पीढ़ी की मानसिकता का प्रतिनिधित्व करता है। वह पुरानी पीढ़ी की दकियानूसी परंपराओं और आज्ञा पालन की अंधी दौड़ पर सवाल उठाता है। देवेश का अपनी माँ की मौत की सच्चाई जानने का 'हठ' और न्याय के लिए खड़ा होना, समाज में नई चेतना का प्रतीक है। मामी के शब्दों में कहें तो-"हम तुम्हें कब से टेर रहे बिन्नू, यहाँ क्यों बैठी कोठा में?देवेस के संग बैठकर अपना टैम न ख़राब करो। इन दिनन तो उन्हें मतारी की झक चढी है। गड़े मुर्दे उखाड रहे हैं। आग लगै!देखो कि ये पढ़े-लिखे हैं, सिर्री हैं। हमारे कहर को बिलमाये फिर रहे हैं। वे भी कहीं उनकी तरह मुँह उठाये न फिरें।" [7]

पुष्पा ने यह भी दिखाया है कि प्रतिरोध हमेशा खुला और मुखर नहीं होता। 'त्रिया हठ' में अनेक पात्र अप्रत्यक्ष प्रतिरोध के स्वरुप अपनाती हैं-चुप्पी, बिडम्बना, हास्य या फिर समाज द्वारा 'नारी धर्म' के रूप में परिभाषित कार्यों को अपने तरीके से करना। ये पात्र अपनी अधीनता के भीतर ही मुक्ति के रास्ते खोजती हैं।

मैत्रेयी पुष्पा की भाषा-शैली अत्यंत प्रवाहमयी और संप्रेषणीय है। 'त्रिया हठ' में उन्होंने आंचलिक शब्दों और लोक-भाषा का ऐसा सुंदर प्रयोग किया है कि पाठक कथा में पूरी तरह रम जाता है। संवाद छोटे-छोटे, चुटीले और मार्मिक हैं जो पात्रों की मनःस्थिति को स्पष्ट करने में पूर्णतः सक्षम हैं। कथा का शिल्प (Structure) रैखिक (Linear) न होकर फ्लैशबैक और संस्मरण शैली का मिश्रण है, जिससे उपन्यास में रहस्य और जिज्ञासा अंत तक बनी रहती है।

मैत्रेयी पुष्पा का त्रिया हठ ग्रामीण स्त्री के संघर्ष और आत्म-स्वीकृति का एक अप्रतिम दस्तावेज है। यह उपन्यास न केवल स्त्री पीड़ा को चित्रित करता है, बल्कि उसकी ताकत, उसके अक्खडपन और उसके हठ को भी उतनी ही गंभीरता से प्रस्तुत करता है। मैत्रेयी जी की भाषा-शैली, उनका यथार्थवादी चरित्र-चित्रण और स्त्री यौनिकता तथा जाती-वर्ग के प्रति उनकी सूक्ष्म दृष्टी इस उपन्यास को हिन्दी

साहित्य के नारीवादी कैनन में एक विशिष्ट स्थान रखती है। उपन्यास के सबसे बड़ी उपलब्धि यह है कि यह स्त्री-विमर्श के ग्रामीण परिवेश की जमीनी वास्तविकताओं से जोड़ता है, जहाँ नारीवादी अवधारणाएँ अपने सैद्धांतिक रूप में नहीं, बल्कि जीवन की उलझनों और विरोधाभासों के साथ अस्तित्व में आती हैं। त्रिया हठ की पात्राएँ हमें याद दिलाती हैं कि स्त्री-सशक्तिकरण कोई उपर से थोपा गया आदर्श नहीं, बल्कि प्रतिदिन के संघर्षों, छोटी-छोटी विजयों और अक्सर बड़ी-बड़ी हारों के बीच से निकलनेवाला यथार्थ है। हिन्दी साहित्य के इतिहास में 'त्रिया हठ' उन बिरले उपन्यासों में से एक है जिसने ग्रामीण स्त्री की आवाज को न केवल सुना, बल्कि उसे उसकी संपूर्ण जटिलता के साथ साहित्यिक अभिव्यक्ति दी। कहा जा सकता है कि-ग्रामीण स्त्री की छवि को पारिवारिक सीमाओं से मुक्त करके सांस्कृतिक निर्माण के रूप में देखना आवश्यक है। 'त्रिया हठ'उपन्यास इसी को साकार करता दिखाई देता है।

उपसंहार

समग्र रूप से विचार करने पर 'त्रिया हठ' हिंदी साहित्य की एक कालजयी कृति सिद्ध होती है। मैत्रेयी पुष्पा ने इस उपन्यास के माध्यम से उन अनगिनत औरतों की आवाज को बुलंद किया है जो सदियों से पितृसत्तात्मक समाज के अत्याचारों को चुपचाप सहती आ रही हैं। यह उपन्यास समाज को यह सोचने पर मजबूर करता है कि स्त्री का हठ केवल उनकी जिद नहीं, बल्कि उनके आत्म-सम्मान, स्वतंत्रता और समानता की पुकार है। उपन्यास की भाषा, शिल्प और कथ्य तीनों ही दृष्टियों से यह उपन्यास हिंदी साहित्य की अमूल्य निधि है। यह साहित्यिक और आलोचनात्मक कसौटी पर खरा उतरता है। यह कृति नारी मुक्ति और सशक्तिकरण के आंदोलन में एक मील का पत्थर है, जो पाठकों को समाज और स्त्री के प्रति अपने दृष्टिकोण को बदलने के लिए प्रेरित करती है। उनकी लेखन में ग्रामीण स्त्री की आवाज को विशेष स्थान प्राप्त है। जहाँ अधिकांश नारीवादी विमर्श शहरीय-मध्यवर्गीय स्त्री पर केन्द्रित रहा, वहीं मैत्रेयी पुष्पा जी ने ग्रामीण स्त्रियों के अनुभवों को जो उपेक्षित दबी कुचली और हाशिये पर धकेली गयी आवाजें हैं। उनका योगदान इस अर्थ में महत्वपूर्ण है कि उन्होंने ब्राहमणवादी और सामंती पितृसत्ता के अंतर्गत स्त्री की स्थिति का यथार्थ चित्रण किया है। मैत्रेयी पुष्पा ने अपने पात्रों को सामजिक-सांस्कृतिक यथार्थ से ओत-प्रोत किया है। उनकी नायिकाएँ न तो आदर्शवादी हैं न ही केवल पीड़ित, वे अपनी कमजोरियों और शक्तियों दोनों के साथ जीवंत स्त्रियाँ हैं।

सन्दर्भ

1. मैत्रेयी पुष्पा: किताबघर प्रकाशन, ४८५५-५६/२४, अंसारी रोड, दरियागंज नयी दिल्ली-११०००२: पृष्ठ संख्या १५
2. मैत्रेयी पुष्पा: किताबघर प्रकाशन, ४८५५-५६/२४, अंसारी रोड, दरियागंज नयी दिल्ली-११०००२: पृष्ठ संख्या ७७
3. मैत्रेयी पुष्पा: किताबघर प्रकाशन, ४८५५-५६/२४, अंसारी रोड, दरियागंज नयी दिल्ली-११०००२: पृष्ठ संख्या ७९
4. मैत्रेयी पुष्पा: किताबघर प्रकाशन, ४८५५-५६/२४, अंसारी रोड, दरियागंज नयी दिल्ली-११०००२: पृष्ठ संख्या २१
5. मैत्रेयी पुष्पा: किताबघर प्रकाशन, ४८५५-५६/२४, अंसारी रोड, दरियागंज नयी दिल्ली-११०००२: पृष्ठ संख्या १०३
6. मैत्रेयी पुष्पा: किताबघर प्रकाशन, ४८५५-५६/२४, अंसारी रोड, दरियागंज नयी दिल्ली-११०००२: पृष्ठ संख्या १२४
7. मैत्रेयी पुष्पा: किताबघर प्रकाशन, ४८५५-५६/२४, अंसारी रोड, दरियागंज नयी दिल्ली-११०००२: पृष्ठ संख्या २१।